# तन्त्रकीर्तिः

## ( प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी-स्मृति ग्रन्थ )


**सम्पादक**

**प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी**

पूर्व आचार्य, संस्कृत विभाग,

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी



**प्रकाशक**

शैवभारती शोध प्रतिष्ठानम्

डी. 35/77 जङ्गमवाड़ीमठ

वाराणसी- 221001

**प्रकाशक :**
**शैवभारती शोध प्रतिष्ठानम्**
डी. 35/77, जङ्गमवाड़ी मठ
वाराणसी- 221001
दूरभाष : (0542) 2450546

© शैवभारती शोध प्रतिष्ठानम्

**मूल्य :** रु. 3000.00 (सजिल्द), रु. 2000.00 (अजिल्द)

**प्रकाशन** - विक्रम संवत् 2074

**ISBN - 978-93-82639-31-2 ( ग्रन्थमाला सं. 91 )**

**अक्षर संयोजन :**
**सार संस्थान,**
पाण्डेयपुर वाराणसी-221002
दूरभाष - (0542) 2586011

**मुद्रक :**
मित्तल ऑफसेट्
सुन्दरपुर, वाराणसी

# आचार्य श्री

आगमन : दि. 30 जुलाई, 1926 प्रस्थान : दि. 17 फरवरी, 2012

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा । तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥

# तन्त्रकीर्तिः

## आचार्य व्रजवल्लभ द्विवेदी-स्मृतिग्रन्थ-प्रकाशन समिति


**वरिष्ठ संरक्षक**

श्री 1008 जगत्गुरु डॉ. चन्द्रशेखर शिवाचार्य स्वामी जी
पीठाधीश्वर, जङ्गमबाड़ी मठ, काशी

**संरक्षक मण्डल**

- श्री श्री गुरुसिद्ध महास्वामी जी
  कारंजीमठ, बेलगाँव, कर्नाटक
- पद्मश्री नवाङ् समतेन
  कुलपति,केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी
- प्रो. अशोक कुमार कालिया, लखनऊ
  (पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)
- प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी, कुलाधिपति, हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा
  शताब्दी पीठाचार्य, भारत-अध्ययन केन्द्र,
  काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

**परामर्शदातृ-मण्डल**

- पद्मश्री रामशंकर त्रिपाठी, वाराणसी
- प्रो. नवजीवन रस्तोगी, लखनऊ
- डॉ. रमा घोष, वाराणसी
- प्रो. मार्क डिस्कावस्कि, यू. के.
- प्रो. संयुक्ता, कैम्ब्रिज, यू. के.

**सम्पादक**

- प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी, वाराणसी

**सह-सम्पादक**

- प्रो. शीतला प्रसाद उपाध्याय, वाराणसी
- डॉ. करुणा एस. त्रिवेदी, ईडर, गुजरात

**प्रबन्ध-सम्पादक**

- डॉ. तरुण कुमार द्विवेदी, वाराणसी



**कार्यालय**

सार संस्थान- ई.8, फेज-2, प्रेमचन्द नगर,
पाण्डेयपुर, वाराणसी-221002 (उ.प्र.)
दूरस्वन- (0542) 2586011, चल दूरस्वन-09415686502
ई-मेल : smritigranth@gmail.com, Web: www.ssar-sansthan.org
फैक्स : (0542) 2586018

# सम्पादकीय

**जयन्ति ते सुकृतिनः प्रज्ञावन्तो विपश्चितः ।**
**नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम् ।।**

**शास्त्रवित्तन्त्रमर्मज्ञो द्विवेदी व्रजवल्लभः ।**
**कृती सोऽद्यापि सर्वत्र स्मर्यते हि सुधीजनैः ।।**

**तस्य सत्कीर्तिशेषस्य पूताचारस्य धीमतः ।**
**पुण्यस्मृतिश्चिरं भूयादनया ग्रन्थचर्यया।।**

संस्कृतविद्या, विशेषतः तन्त्रागम के क्षेत्र में अपने कर्तृत्व और उपलब्धियों से सम्पूर्ण विश्व में भारत-वैदुषी के सुप्रतिष्ठ कीर्तिध्वज को समुच्छ्रित करने वाले मनीषी मनस्वी पूज्य स्व. प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी के प्रति हार्द श्रद्धाञ्जलि के रूप में स्मृति ग्रन्थ **तन्त्रकीर्तिः** सहृदय सुधी पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। इस सारस्वत यज्ञ में कृपापूर्वक अपनी वाङ्मयी आहुति प्रदान करने वाले विद्वान् लेखकों के प्रति विनम्र कार्तज्ञ समर्पित है। जिन्होंने निर्धारित समयावधि में अपना योगदान कर हमें उपकृत किया और साथ ही ग्रन्थ प्रकाशन में अनपेक्षित विलम्ब के लिए उनसे क्षमा प्रार्थी भी हैं। अच्छे कार्य में बाधाएँ आती ही हैं किन्तु हमें प्रसन्नता है कि अन्ततः हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हुए।

श्रद्धेय प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी जी अपनी अन्तिम सांस तक निरन्तर चिन्तन, मनन और लेखन में क्रियाशील रहे। चाहे लेखन हो, चाहे उनकी वक्तृता रही हो, वे सदैव विषय को स्पष्ट अभिव्यक्ति प्रदान करते थे। कारण, उनका शास्त्राध्ययन इतना गहन और व्यापक था कि विषयवस्तुगत जटिल समस्याएँ भी उन्हें हस्तामलकवत् हो जाती थीं।

स्मृतिग्रन्थ की प्रकाशन समिति के सभी माननीय सदस्यों के हम आभारी हैं जिन्होंने अपने स्तर से हमें पर्याप्त सहयोग प्रदान किया है। विशेषरूप से संरक्षक परम श्रद्धेय जगत्गुरु डॉ. चन्द्रशेखर शिवाचार्य महास्वामी जी का मङ्गलाशीष हमारा मनोबल बढ़ाता रहा। वरेण्य विद्वानों के सत्परामर्श से दिशानिर्देश मिलता रहा। ग्रन्थ को मूर्तरूप प्रदान करने में सम्पादक मण्डल का सौजन्ययुत श्रम समुल्लेख्य है। विशेषतः सह-सम्पादक प्रो. शीतला प्रसाद उपाध्याय एवं डॉ. करुणा एस. त्रिवेदी ने निबन्ध संशोधन में पर्याप्त योगदान किया। आचार्य द्विवेदी जी के सुपुत्र डॉ. तरुण कुमार द्विवेदी प्रबन्धगत कार्यों में सदैव हमारे सम्पर्क में रहे। प्रिय शिष्य डॉ. सरदार सरबजीत सिंह (प्रवक्ता, संस्कृत, राजकीय क्वींस कालेज, वाराणसी) एवं श्री ददन उपाध्याय ने प्रूफ संशोधन एवं सामग्री सङ्कलन में पर्याप्त श्रम किया, इन सभी के लिए मंगलकामना।

सार संस्थान के कार्यालय-सहायक श्री सुनील कुमार ने ग्रन्थसम्पूर्ति में अपनी विशिष्ट सेवा प्रदान की है, इस ग्रन्थ के प्रकाशक एवं मुद्रक ने भी अपनी सस्नेह सेवाएँ दीं। एतदर्थ इन्हें भूरिशः साधुवाद एवम् आशीर्वाद।

इस महनीय कार्य से सम्बद्ध सभी महानुभावों के प्रति सादर आभार। अन्ततः,

**विश्वनाथप्रसादेन प्रासादोऽयं विनिर्मितः।।**
**भारती भा-रता सैषा सर्वदाऽस्मिन् प्रसीदतु।।**

**–सम्पादक ।**

# तन्त्रकीर्तिः

## विषयानुक्रम


| आशीर्वचन/सन्देश/संस्मरण | | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1. | आशीर्वचन- जगद्गुरु स्वामी डॉ. चन्द्रशेखर शिवाचार्य जी | | xi |
| 2. | **सन्देश** | | |
| | क. प्रधानमंत्री | | xii |
| | ख. सचिव | | xiii |
| | ग. मंत्रीगण | | xv |
| | घ. कुलपति | | xvi |
| | ङ. अन्य विशिष्टजन | | xviii |
| 3. | संक्षिप्त परिचय ( प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी जी) | | xxi |
| 4. | प्रातः स्मरणीय गुरुदेव : | **श्रीमान् निरंजन प्रणवस्वरूपि श्री गुरुसिद्ध महास्वामी जी** | 1 |
| 5. | तन्त्रशास्त्र के प्रतिमान : आचार्य व्रजवल्लभ द्विवेदी | **प्रो. अमरनाथ पाण्डेय** | 2 |
| 6. | आचार्य पं. व्रजवल्लभ द्विवेदी : व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व | **प्रो. शीतला प्रसाद उपाध्याय** | 7 |
| 7. | वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि | **डॉ. करुणा एस. त्रिवेदी** | 14 |
| 8. | तन्त्रसाधना एवं संस्कृति के विश्वरूप | **डॉ. तरुण कुमार द्विवेदी** | 19 |
| 9. | आचार्यव्रजवल्लभेभ्यः पद्यसुमाञ्जलिशतकम् | **डॉ. धर्मदत्त चतुर्वेदी** | 43 |
| 10. | चिरस्मरणीय यादों के पल | **डॉ. तरुण कुमार द्विवेदी** | 50 |
| 11. | पथ प्रदर्शक का स्मरण | **शोभा त्रिपाठी** | 53 |
| 12. | सरस्वती के उपासक | **श्रीमती आशा त्रिवेदी** | 55 |
| 13. | इष्टदेव वन्दना, ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये | **विद्यावल्लभ दवे** | 57 |

**निबन्ध**


| | | | |
|---|---|---|---|
| 14. | शाक्ताद्वैततत्त्वविमर्शः | **प्रो. शिवजी उपाध्यायः** | 64 |
| 15. | ध्वन्यालोकलोचनेऽभिनवगुप्तस्वातन्त्र्यम् | **प्रो. रहसबिहारी द्विवेदी** | 73 |
| 16. | श्रीमद्भगवद्गीताया उपनिषद्रूपता | **प्रो.विन्ध्येश्वरीप्रसाद मिश्रो 'विनयः'** | 86 |
| 17. | काव्यलक्षणपरिष्कारे रसचन्द्रिकाया वैशिष्टयम् | **प्रो. रामकुमार शर्मा** | 93 |
| 18. | शैवागमसन्दर्भे निगमागमयोरन्तस्सम्बन्धः | **प्रो.उमारानी त्रिपाठी** | 99 |
| 19. | अद्वैतवेदान्ते कर्मयोगसमीक्षणम् | **डॉ. धनञ्जय कुमार पाण्डेयः** | 104 |
| 20. | वेदान्तदृष्ट्या सृष्टितत्त्वानां वैज्ञानिकमनुशीलनम् | **प्रो. जय प्रकाश नारायण त्रिपाठी** | 110 |
| 21. | भार्गवीयमहाकाव्यस्य काव्यशास्त्रीयं वैशिष्ट्यम् | **डॉ. सनन्दन कुमार त्रिपाठी** | 113 |
| 22. | काश्मीरशैवदर्शनदिशा शब्दब्रह्माद्वयवादसमीक्षा | **प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी** | 123 |
| 23. | वैदिकर्षीणामीश्वरैकत्वचिन्तनं तद्विमर्शश्च | **डॉ. प्रह्लादसहायबुनकरः** | 132 |
| 24. | पुराणसंरक्षणे ज्ञातिपुराणानां महत्त्वम् | **डॉ. दक्षा जोशी** | 141 |
| 25. | वैष्णवतन्त्रों के सन्दर्भ में समता के स्वर | **प्रो. अशोक कुमार कालिया** | 144 |
| 26. | पुष्टिमार्गीय ख्याति-विचार की समीक्षा : काश्मीर शैवसिद्धान्त के विशेष परिप्रेक्ष्य में | **प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र** | 152 |
| 27. | काश्मीर के अद्वैत शैवतन्त्रों में सामाजिक समता | **प्रो. नवजीवन रस्तोगी** | 165 |
| 28. | अभिज्ञान शाकुन्तल के पाठ विचलन की अनुक्रमिकता | **प्रो. वसन्त कुमार भट्ट** | 173 |
| 29. | सामाजिक व्यवस्था और बौद्धदृष्टि | **पद्मश्री प्रो. रामशङ्कर त्रिपाठी** | 192 |
| 30. | बौद्धतन्त्र व निगमागम-सम्बन्ध | **प्रो. यदुनाथ प्रसाद दुबे** | 198 |
| 31. | श्रीमद्भगवद्गीता में योग की अवधारणा | **प्रो. गयाराम पाण्डेय** | 208 |
| 32. | तान्त्रिक मोक्ष का अथर्ववेदीय आधार | **प्रो.राजेश्वर मिश्र** | 212 |
| 33. | वेदोक्त मानवीय एवं सामाजिक मूल्य और गीता | **डॉ. भगवत् शरण शुक्ल** | 220 |
| 34. | प्राकृत साहित्य एवम् आधुनिक शोध प्रविधियाँ | **प्रो. हरिशंकर पाण्डेय** | 228 |
| 35. | किरातार्जुनीय और शिशुपालवध महाकाव्य में दण्डनीति | **प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी** | 233 |
| 36. | गीत गोविन्द का मंगलश्लोक | **प्रो. राजेन्द्र नाणावटी** | 245 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 37. | अण्ड-पिण्ड सिद्धान्त का समीक्षण | **डॉ. राजनाथ त्रिपाठी** | **251** |
| 38. | नाट्यशास्त्रानुमत लोकधर्मी एवं नाट्यधर्मी परम्परा का अन्तःसम्बन्ध : सामान्याभिनय के परिप्रेक्ष्य में | **प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी** | **257** |
| 39. | अथर्ववेदीय मणिबन्धन का तान्त्रिक विधान | **डॉ. सुधाकर मालवीय** | **275** |
| 40. | वाल्मीकि-रामायण में ज्योतिषतत्त्वानुशीलन | **प्रो. नागेन्द्र पाण्डेय** | **293** |
| 41. | कुण्डलिनी योग एवं षट्चक्रोपासना | **डॉ. सुनील कुमार उपाध्याय** | **298** |
| 42. | वेदाध्ययन-विधि एवं महत्त्व | **डॉ. अरुण कुमार मिश्र** | **313** |
| 43. | वेदों में उल्लिखित नदियां | **प्रो.अरविन्द पी. पटेल** | **317** |
| 44. | महाकवि कालिदास की कृतियों में वनस्पत्यौषधियाँ | **सकीना कुमारी सालवी** | **323** |
| 45. | काव्यशास्त्र के निकष पर रघुवंश महाकाव्य ........ | **डॉ. विद्याधर सिंह** | **330** |
| 46. | चर्चामहाकाव्य में वर्णित नारी | **श्री प्रदीप कुमार शुक्ल** | **339** |
| 47. | संस्कृत वाङ्मय में योगविद्या का विमर्श | **डॉ. सहदेव शास्त्री** | **343** |
| 48. | वेदों में उदात्त राष्ट्रीय भावना | **प्रो. मनसुख पी. पटोलिया** | **349** |
| 49. | सीता की अग्निपरीक्षा प्रसंग का संस्कृत नाटकों में निरूपण | **डॉ. दिनेशचन्द्र चौबीसा** | **353** |
| 50. | भारत में स्त्री-आन्दोलन का इतिहास | **डॉ. वीणा द्विवेदी** | **357** |
| 51. | ब्राह्मण-ग्रन्थों में जीवन-दर्शन | **श्री नरेन्द्र कुमार पितलिया** | **370** |
| 52. | श्री रामचरित मानस में दो वरदान | **डॉ. स्वामी जयेन्द्रानन्द सरस्वती 'हरिओम'** | **374** |
| 53. | श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में श्रीराम की जीवनचर्या | **डॉ. राकेश्वरी प्रसाद** | **381** |
| 54. | तुलसीदास और उनका काव्य | **श्री मानेश्वर नाथ गुर्जर** | **387** |
| 55. | योग-विमर्श | **डॉ. बैजनाथ पाण्डेय** | **389** |
| 56. | छत्रपतिसाम्राज्यम् में सात्त्विक अभिनय | **डॉ. उपेन्द्रदेव पाण्डेय** | **392** |
| 57. | दैववाद एवं कर्मवाद के सम्बन्ध में आदि कवि.. | **डॉ. श्रीमती मिण्टी पाण्डेय** | **397** |
| 58. | संस्कृत साहित्य में मण्डन-कला के प्रतिमान | **डॉ. भावना आचार्य** | **403** |
| 59. | राजस्थान में शक्तिपूजा एवं स्थल | **श्री रामनारायण सोनी** | **408** |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 60. | वेदान्त दर्शन में ब्रह्म-स्वरूप-निरूपण | **डॉ. धनंजय कुमार सिंह** | **411** |
| 61. | वेदों में सृष्टि विज्ञान | **श्री सत्यनारायण भारद्वाज** | **415** |
| 62. | श्रीगणपति-तत्त्व-विमर्श | **डॉ. पवन कुमार शास्त्री** | **422** |
| 63. | धर्मशास्त्र की उदारता | **डॉ. ज्योत्स्ना सी. रावल** | **430** |
| 64. | पातञ्जल योग सूत्र और मनोनुशासन का तुलनात्मक अध्ययन | **डॉ. विनोद कुमार पाण्डेय** | **433** |
| 65. | अश्रुवीणा में उपचारवक्रता | **प्रो. दीनानाथ शर्मा** | **440** |
| 66. | श्रीमद्भागवत महापुराण में मानव-मूल्य | **डॉ. बाबूलाल मीना** | **445** |
| 67. | श्रीमद्भागवत पुराण कालीन अर्थव्यवस्था | **डॉ. आशा सिंह** | **453** |
| 68. | आचार्य हरिभद्र और पतञ्जलि के योगशास्त्रों में ईश्वर व क्रियायोग : एक समीक्षा | **डॉ. देवीशङ्कर शर्मा** | **462** |
| 69. | कुन्ती स्तुति : एक अनुशीलन | **डॉ. मनोज कुमार चतुर्वेदी** | **466** |
| 70. | समयसार में भेद-विज्ञान- निरूपण | **श्रीमती रेखा यादव** | **469** |
| 71. | Saiva Siddhanta- The Phenomenology of Grace | **Dr. Rama Ghosh** | **473** |
| 72. | Divine Grace According to the Advaita Saiva School of Kashmir | **Dr. Debabrata Sen Sharma** | **479** |
| 73. | Veda Vyasa And Mahabharata | **Dr. Uttam Singh** | **488** |
| 74. | Hrt Vimarsah (हृत्-विमर्शः) | **Nihar Purohit** | **492** |
| 75. | The Root and Explanation on the Sutra of Recollecting the Triple Gem. | **Dr. Tashi Tsering** | **497** |


******

# शुभाशंसा

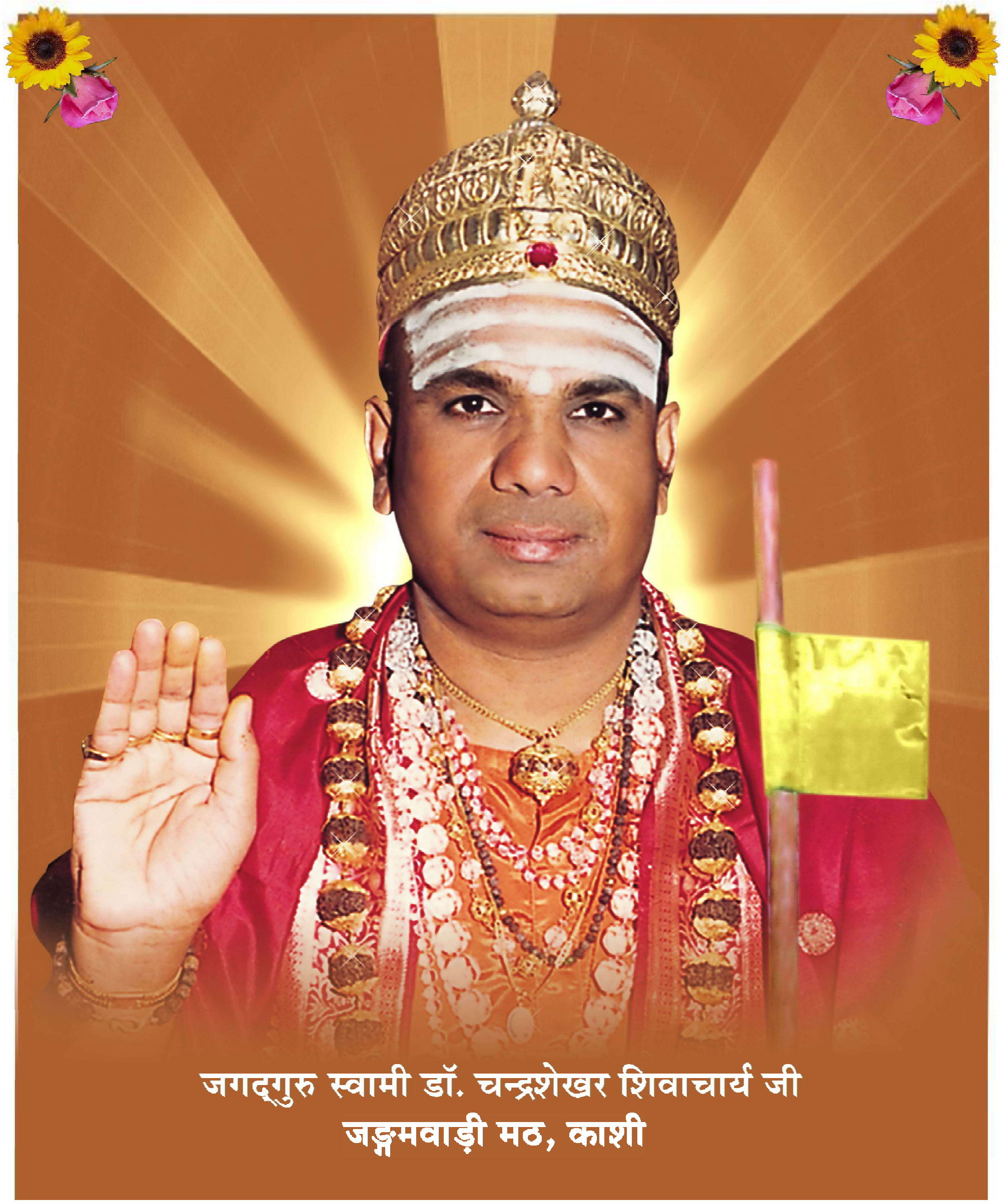

जगद्गुरु स्वामी डॉ. चन्द्रशेखर शिवाचार्य जी
जङ्गमवाड़ी मठ, काशी

# जगद्गुरुस्वामी डॉ. चन्द्रशेखर शिवाचार्य जी

## आशीर्वचन

आचार्य व्रजवल्लभ द्विवेदी तन्त्रागम विषय के एक मूर्धन्य विद्वान रहे, महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज जी के अंतरंग शिष्यों में से आप भी एक रहे, तन्त्र और आगम सम्बन्धी सभी ग्रन्थों का तलस्पर्श अध्ययन करके उस विषय के अद्वितीय विद्वान् आप थे। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के तन्त्रागम विभाग के जब आप विभागाध्यक्ष थे तब हमारा उनसे सम्पर्क हुआ तथा वे हमारे मार्गदर्शक बने। जब काशी जंगमवाड़ी मठ में शैव भारती शोध प्रतिष्ठान की स्थापना हुयी उसके प्रेरणास्थान आप ही थे और आप ही संस्थापक निदेशक के रूप में अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक कार्य करते रहे। आपके कुशल निर्देशन में ४० से अधिक ग्रन्थ सम्पादित हो कर प्रकाशित हुये। शैव और वीर शैव धर्म के अनेक आगमों का सम्पादन, संशोधन, प्रकाशन कार्य आपके ही निर्देशन में होता आया। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली से अपनी संस्था सम्बद्ध होने के कारण अनेक छात्र-छात्राओं ने पीएच.डी. की उपाधि भी आपके मार्ग दर्शन में प्राप्त की।

'विद्यायाध्ययनं तथा' इ उक्ति के अनुसार निरन्तर अध्ययन, अध्यापन में व्यस्त होने के कारण आपका जीवन एक तपस्वी जीवन से कम नहीं था। 'निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम् यह उक्ति आपके जीवन में सार्थक हो जाती है।

हमारे विद्यार्थी अवस्था में संशोधन के समय सिद्धि और विषय-संयोजन में आपका बहुमूल्य मार्गदर्शन हमें प्राप्त था। देश विदेश के विद्वान् लोग आगम तत्त्वों को जानने के लिये आपकी शरण में आते थे। इससे सिद्ध होता है कि आप तन्त्रागम विषय के अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान् रहे। आपके नहीं रहने के कारण तन्त्रागम विषय में जो खाई निर्मित हुयी है उसको भरना असम्भव जैसा लग रहा है। व्यावहारिक जीवन में आर्थिक संकट होने पर भी किसी से भी कुछ अपेक्षा न करने वाला एक अर्थशुचित्व का व्यक्तित्व आपका रहा। ग्रन्थ प्रकाशन के समय में उसकी शुद्धि की तरफ आपका पूर्ण लक्ष्य रहता था। खुद देखने के बाद किसी विशिष्ट विद्वान् को पुनः देखने के लिये देते कि कोई व्यक्ति उनके किताब के एकाध मुद्रण दोष निकाल देते थे तो वह बहुत प्रसन्न होते थे। कहते थे-तुम्हारे कारण मेरा ग्रन्थ शुद्ध हुआ। ऐसा गुणग्राही व्यक्तित्व आपका रहा। ऐसे महनीय विभूति के बारे में उनके सुपुत्र डॉ. तरुण कुमार द्विवेदी अनेक विद्वानों के सहयोग से एक अपूर्व ग्रन्थ प्रकाशित करने जा रहें हैं। इस ग्रन्थ में आचार्य द्विवेदी जी के जीवन और कार्य के प्रति तथा उनके व्यक्तित्व से प्रभावित अनेक विद्वानों के लेखों का संग्रह समाविष्ट है। यह एक अत्यन्त उपादेय ग्रन्थ है। विद्वत् समाज में इस ग्रन्थ का समादर होगा—ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। यह ग्रन्थ अपने आप में अभूतपर्व हो तथा ज्ञान का भण्डार हो ऐसा प्रयास किया जा रहा है। इस कार्य को तत्परता से कर रहे डॉ. तरुण कुमार द्विवेदी एवं उनके सहयोगी सभी विद्वज्जनों को काशी विश्वनाथ, माता अन्नपूर्णा एंव अनन्त श्री जगद्गुरुविश्वाराध्य जी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त हो—ऐसी मंगलकामना करते हैं।

इत्याशीषः।

श्रीशारदापीठम्
द्वारका, जामनगर, गुजरात
दूरभाष : 02892-234064

अनन्तश्रीविभूषित ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य
**स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज**

श्रीज्योतिर्मठः
तोटकाचार्य गुफा, जोशीमठ, चमोली
गढ़वाल, उत्तराखण्ड
दूरभाष : 01389-222185

क्रमांक.................. सञ्चारयात्रास्थल.................................................. दिनाङ्क :.................

## शुभकामना-सन्देश

प्रोफेसर ब्रजवल्लभ द्विवेदी जी को हमने पुरीपीठ के तत्कालीन जगद्गुरु स्वामी निरंजनदेव तीर्थ जी महाराज के साथ धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज के पास आते-जाते देखा था । बाद में जब धर्मसम्राट् स्वामी करपात्री जी महाराज के ग्रन्थ 'वेदार्थ पारिजात' के हिन्दी अनुवाद करने का अवसर आया तो काशीस्थ पण्डितों में से यह अवसर ब्रजवल्लभ द्विवेदी जी को मिला था । तब स्वामी करपात्री जी महाराज ने कहा था कि 'मेरे भावों को याथातथ्य रूप से समझने और व्यक्त करने में ब्रजवल्लभ द्विवेदी जी ही समर्थ होंगे ।' धर्मसम्राट् की यह उक्ति पण्डित ब्रजवल्लभ द्विवेदी जी के अशेष व्यक्तित्त्व और गरिमा को कह देने में समर्थ है । बाद में तो उनसे हम सबकी आत्मीयता बढ़ी और शास्त्र-चर्चा होती ही रहती थी । आज वे यशःशेष हैं पर कीर्ति-शरीर ही तो जरा-मरण-भय से उपरत है ।

हमें प्रसन्नता है कि उनके एकमात्र पुत्र श्री तरुण कुमार द्विवेदी जी भी अपने पिताश्री के मार्ग पर अग्रसर हैं और अपना समय काव्यशास्त्रानुशीलन में व्यतीत करते हैं । इनके द्वारा अपने पिताजी की कीर्ति को बढ़ाने वाले ग्रन्थ 'तन्त्रकीर्ति' का प्रकाशन हो रहा है यह जानकर अति प्रसन्नता हुई ।

ग्रन्थ, न केवल उनका स्तावक अपितु पीढ़ियों का प्रेरक बने यही श्रीचन्द्रमौलीश्वर एवं पराम्बा से प्रार्थना है ।

जगद्गुरु शंकराचार्य जी महाराज की आज्ञा से

(स्वामिश्रीः अविमुक्तेश्वरानन्दः सरस्वती)

सत्यमेव जयते

प्रधान मंत्री

Prime Minister

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि जंगमबाड़ी मठ एवं शैवभारती शोध प्रतिष्ठान, वाराणसी द्वारा प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी जी के जीवन वृतांत को शब्दबद्ध करते हुए स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

संस्कृत साहित्य जगत की इस विभूति को मेरा नमन।

प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी जी के योगदान से संस्कृत साहित्य जगत उपकृत रहा है। उनके लेखन और कृतित्व की एक अलग ही पहचान थी। आजीवन वह संस्कृत की साधना में लीन रहे। हमारे लिए यह गर्व का विषय है कि भारत की धरती ऐसे मनीषी रत्नों से युक्त रही है। संस्कृत की एक सूक्ति में कहा गया है – **'स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते' अर्थात् राजा को तो अपने देश में ही पूजा जाता है पर विद्वान की सर्वत्र पूजा होती है।** प्रो. व्रजवल्लभ जी ऐसे ही विद्वान थे जिनका सम्मान देश ही नहीं विदेशों में भी हुआ।

ऐसे प्रकांड विद्वान और अध्येता के जीवन को स्मृति ग्रंथ के रूप में प्रकाशित करना प्रशंसनीय प्रयास है, आशा करता हूं कि इस स्मृति ग्रंथ के जरिए पाठकों को प्रो. व्रजवल्लभ जी के जीवन से जुड़े पहलुओं से करीब से परिचित होने का अवसर मिलेगा।

प्रकाशपुंज के रूप में यह स्मृति ग्रंथ अपनी उपयोगिता सिद्ध करे, इसी कामना के साथ स्मृति ग्रंथ के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

नरेन्द्र मोदी

**(नरेन्द्र मोदी)**

नई दिल्ली
09 मई, 2017

**डॉ. तरुण कु. द्विवेदी**
प्रबन्ध सम्पादक
ई - 8, फेज - 2, प्रेमचन्द नगर

जी. के. दास
भारत की राष्ट्रपति का निजी सचिव
*G K. Das*
*Private Secretary to the President of India*

सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली-110004.
*Rashtrapati Bhavan,*
*New Delhi - 110004.*

दिनांक : 19 जुलाई, 2012

प्रिय डॉ. द्विवेदी जी,

राष्ट्रपति जी को प्रेषित आपका दिनांक 10.07.2012 का पत्र प्राप्त हुआ, धन्यवाद। उन्हें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी की संस्कृत सेवा को सम्मानित करने एवं उनकी पुण्य स्मृति को अक्षुण्ण रखने हेतु एक स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

राष्ट्रपति जी इस प्रयास के लिए आपको शुभकामनाएं प्रेषित करती हैं। तथा स्मृति ग्रंथ के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करती हैं।

सादर,

आपका,

(जी.के. दास)

डॉ. तरुण कु. द्विवेदी,
प्रबंध सम्पादक,
आचार्य ब्रजवल्लभ द्विवेदी स्मृति ग्रंथ,
ई-8, फेज-2, प्रेमचन्द नगर,
पाण्डेयपुर, वाराणसी-221002
(उ.प्र.)

अंशुमान गौड़
ANSHUMAN GAUR

भारत के उप-राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी
OFFICER ON SPECIAL DUTY
TO THE VICE-PRESIDENT OF INDIA
नई दिल्ली/NEW DELHI - 110011
TEL. : 23016422 / 23016344 FAX : 23012645

**MESSAGE**

The Hon'ble Vice President of India extends his greetings and best wishes to all those associated with brining out Remembrance Scripture publication of Acharya Vraj Vallabh Dwivedi.

**(Anshuman Gaur)**

**New Delhi**
**21st April, 2017.**

**सुरेन्द्र सिंह पटेल**
राज्य मंत्री
लोक निर्माण एवं सिंचाई

जी–2/3, प्रथम तल, बापू भवन
उ. प्र. सचिवालय, लखनऊ
दूरभाष : कार्यालय : 2235302
सी0एच0 : 2214803

पत्रांक 12 /वी.आई.पी./रा.मं./लो.नि.एवं सिंचा.
लखनऊ, दिनांक 22/5/2013

## संदेश

प्रिय महोदय,

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि आचार्य पण्डित श्री ब्रजबल्लभ द्विवेदी जी की संस्कृत सेवा को सम्मानित करने एवं उनकी पुण्य स्मृति को अक्षुण्ण रखने हेतु श्रद्धेय पीठाधीश्वर, जंड़मबाडी मठ एवं शैवभारती शोध प्रतिष्ठान वाराणसी द्वारा एक स्मारिका का भी प्रकाशन किया जा रहा है।

कीर्तिशेष प्रो0 ब्रजबल्लभ द्विवेदी की विद्वता एवं तन्त्र साधना वर्तमान युग के शैक्षणिक जगत में एक आदर्श है। वे संस्कृत वाङ्मय के अध्येता, चिन्तक और मनीषी गवेषक थे। उनकी अतुलनीय संस्कृत सेवा के कारण विभिन्न पुरस्कारों से सम्मनित भी किया गया तथा आपके द्वारा बहुत सी कृतियों का लेखन एवं सम्पादन किया गया, जो हमारे देश एवं विदेश में विद्वानों एवं शोधार्थियों के अध्ययन में सहायक सिद्ध हो रही हैं। मुझे आशा है कि स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगा । इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले स्मृति ग्रन्थ के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका,

सुरेन्द्र पटेल
(सुरेन्द्र सिंह पटेल)

डॉ0 तरूण कु0 द्विवेदी,
प्रबन्ध–सम्पादक
सार संस्थान–ई–8, फेज–2,
प्रेमचन्द नगर, पाण्डेयपुर,
वाराणसी।

**केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा-संस्थान, सारनाथ, वाराणसी**

ཀྲུང་དབྱང་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་། སཱ་ར་ནཱ་ཐ། ཝཱ་ར་ཎ་སཱི།

सन्देश

आर्यदेश भारत प्राचीन समय से ज्ञान पिपासु मनीषियों का अजस्र स्रोत रहा है, जिसके फलस्वरूप भारत में अनेक विध विद्या-परम्पराओं का प्रादुर्भाव और विकास हुआ तथा यहीं से सम्पूर्ण विश्व में इनका प्रचार-प्रसार हुआ। इसी परम्परा में प्राचीन भारतीय विद्या एवं संस्कृति के अक्षुण्ण संधारकों में प्रोफेसर व्रजवल्लभ द्विवेदी जी समकालीन समय में अन्यतम थे। द्विवेदी जी ने भारतीय तन्त्र-विद्या एवं संस्कृति के युग-पुरुष महामहोपाध्याय गोपीनाथ कविराज जी की परम्परा में तन्त्रविद्या एवं संस्कृति के परिमार्जन तथा अध्ययन-अध्यापन एवं प्रकाशन का जो अविस्मरणीय कार्य किये हैं, वे सदियों तक तन्त्रविद्या के ज्ञान पिपासुओं को मार्ग प्रदर्शित करता रहेगा।

सन् 1985 में जब इस संस्थान में प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जी के नेतृत्व में बौद्धतन्त्रों के दुर्लभ ग्रन्थों पर शोध एवं प्रकाशन की योजना स्वीकृत हुई, तब उन्होंने भी सहर्ष इसमें अपनी सेवा प्रदान करने की सहमति दी और कालान्तर में उपाध्याय जी के देहावसान के पश्चात् इस योजना का सकुशल निर्देशन करते हुए इसे प्रकर्ष तक ले गए और अनेक युवा सहकर्मियों को इस कार्य में प्रशिक्षित किया। इतना ही नहीं, आपने इस संस्थान से अप्रकाशित बौद्ध तन्त्रशास्त्रों का सम्पादन एवं प्रकाशन कर सम्पूर्ण विश्व के विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया तथा अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन कर तन्त्र के दुरुह विषयों पर विद्वानों के मध्य संवाद स्थापित किया।

प्रोफेसर द्विवेदी जी का व्यक्तित्व बहु-आयामी था तथा भारत में ही नहीं अपितु विश्व में तन्त्र-विद्या के प्रामाणिक विद्वान् के रूप में प्रसिद्ध थे। आपने अपनी रचनाओं द्वारा भारतीय तन्त्रविद्या और संस्कृति को विश्वभर में प्रचारित किया। भारतीय दर्शन, आगम, तन्त्रशास्त्र, भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रवाद पर आपने शताधिक ग्रन्थों का प्रणयन एवं सम्पादन कर विद्वत् समाज को समर्पित किया।

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित तन्त्रशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् स्व. आचार्य व्रजवल्लभ द्विवेदी जी की पुण्यस्मृति में एक स्मृति-ग्रन्थ का प्रकाशन हो रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आचार्य द्विवेदी जी की पुण्यस्मृति में प्रकाशित होने वाला यह ग्रन्थ भारत एवं विश्व के शैक्षिक जगत् के अध्येताओं के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

इस अवसर पर मैं इस स्मृति-ग्रन्थ की सफलता पूर्वक प्रकाशन के लिए प्रकाशन समिति को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

१८.०६.२०१८
सारनाथ, वाराणसी

ङवङ समतेन
कुलपति
**कुलपति**
**केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान**
**सारनाथ, वाराणसी-२२१००७ उ०प्र०**

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES, SARNATH, VARANASI-221007, INDIA
PHONE: (0542) 2585242 • FAX: (0542) 2585150

प्रो० टी० एन० सिंह
कुलपति
*Prof. T. N. Singh*
*Vice Chancellor*

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी-२२१ ००२
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi-221 002

दिनांक—17 मई, 2018

**संदेश**

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि श्रद्धेय पीठाधीश्वर, जंगमबाड़ी मठ एवं शैवभारती शोध प्रतिष्ठान, वाराणसी द्वारा कीर्तिशेष प्रो0 व्रजवल्लभ द्विवेदी जी की संस्कृत सेवा को सम्मानित करने एवं उनकी स्मृति को अक्षुण्ण रखने हेतु एक ग्रंथ का प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है ग्रंथ में प्रो0 व्रजवल्लभ द्विवेदी जी के व्यक्तित्व एवं संस्कृत में अप्रतिम योगदान का संकलन कर प्रकाशन किया जायेगा, जो जनसामान्य के लिए प्रेरणादायक होगा।

मैं ग्रंथ के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ तथा प्रकाशन में लगे सभी सुधीजनों को साधुवाद देता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित।

(प्रो0 टी0एन0 सिंह)
कुलपति

डॉ० पृथ्वीश नाग
कुलपति

*Dr. Prithvish Nag*
*Vice Chancellor*

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी–२२१ ००२

Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith,
Varanasi-221 002.

दिनांक– 27 अप्रैल, 2017

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि संस्कृत विद्या के मर्मज्ञ, विलक्षण प्रतिभा के धनी एवं तंत्र दर्शन के असाधारण विद्वान कीर्तिशेष प्रो० व्रजवल्लभ द्विवेदी जी की पुण्यस्मृति में एक **"स्मृतिग्रन्थ"** का प्रकाशन हो रहा है। बहुभाषाविद् प्रो० द्विवेदी राष्ट्रपति पुरस्कार सहित अन्य विविध पुरस्कारों तथा सम्मानों से विभूषित हुए है। उन्होंने आजीवन सारस्वत साधना करते हुए सताधिक ग्रंथो द्वारा संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया। उनका वैदुष्य राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रो० द्विवेदी की पुण्यस्मृति में प्रकाशित होने वाला यह ग्रन्थ संस्कृत के अध्येताओं तथा शोधार्थियों के लिए उपादेय सिद्ध होगा। मैं इस ग्रन्थ की प्रकाशन–समिति को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित,

पी. नाग

(पृथ्वीश नाग)
कुलपति

Tel: +91 542-2225472 (O), 2221268 (R), 2223160(Camp Off.), Fax: 2225472 (O), 2221268(R), e-mail: vcmgkvp@sancharnet.in

**दीपक अग्रवाल**
आई. ए. एस.

अ.शा.पत्रांक..Memo/PA आयुक्त
कार्यालय : 2508203
: 2502158
: 2282333
निवास : 2282444
फैक्स : (0542) 2282345
**आयुक्त, वाराणसी मण्डल, वाराणसी**
दिनांक : 25/05/2010

**शुभकामना सन्देश**

यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि तन्त्रशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के मर्मज्ञ, ब्रम्हालीन आचार्य पं० व्रजवल्लभ द्विवेदी जी की पुण्यस्मृति में एक **"स्मृति ग्रन्थ"** का प्रकाशन हो रहा है।

बहुआयामी प्रतिभा के धनी प्रो० द्विवेदी जी तन्त्रदर्शन के ख्यातिलब्ध विद्वान थे जिनके कई ग्रन्थ प्रकाशित भी हुए हैं। यह उनका समाज के प्रति अभूतपूर्व योगदान था। उनके वैदुष्य को देखते हुए उन्हें कई पुरस्कारों से नवाजा भी गया।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आचार्य द्विवेदी जी के पूर्णस्मृति में प्रकाशित होने वाला यह ग्रन्थ आम जनमानस के साथ-साथ शैक्षणिक जगत के अध्येताओं तथा शोधार्थियों के लिए भी काफी उपयोगी सिद्ध होगा।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए प्रकाशन समिति को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित।

भवन्निष्ठ,
25/5/10
(दीपक अग्रवाल)

**डा० तरूण कुमार द्विवेदी,**
प्रबन्ध-सम्पादक,
आचार्य व्रजवल्लभ द्विवेदी
स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति,
सार संस्थान-ई-8, फेज-2,
प्रेमचन्द नगर, पाण्डेयपुर,
वाराणसी-221002

शैक्षिक केंद्र :
3/9 विपुल खण्ड,
गोमती नगर,
लखनऊ – 226 010
टैलीफैक्स : 0522-2392636
ईमेल : icprlkw@gmail.com

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

Academic Centre :
3/9, Vipul Khand,
Gomti Nagar,
Lucknow - 226 010
Telefax : 0522-2392636
Email : icprlkw@gmail.com

## स्व. प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी जी को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त श्रद्धाञ्जलि

आगमों, काश्मीर शैव तंत्रों व सांख्य-योग-शाक्त-पाञ्चरात्रादि दर्शनों के परम्परागत विद्वान्, सुप्रसिद्ध संस्कृतज्ञ, प्रो. द्विवेदी, महामहोपाध्याय पं. गोपीनाथ कविराज के शिष्य थे और पहले राजकीय संस्कृत कालेज वाराणसी में, और बाद में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में, कविराज जी के उत्तराधिकारी के रूप में **'सांख्य-योग-तत्रागम विभाग'** के प्रमुख भी रहे। वे वाराणसी के ऐतिहासिक जंगमवाणी मठ द्वारा संचालित, **शैव भारती संस्थान** के निदेशक तथा **केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय**, सारनाथ स्थित **'दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ पुनरुद्धार योजना'** के उपनिदेशक भी रहे। उन्होंने शैव-शाक्त-पाञ्चरात्रादि दर्शनों, आगमों व तंत्र परम्पराओं पर अनेक ग्रन्थ लिखे व अनेक लुप्त हो चुके ग्रन्थों का पुनरुद्धार किया। विश्व संस्कृत सम्मेलनों आदि में, अनेक योरोपीय देशों की यात्रायें कीं और **परम्परागत पाण्डित्य को, आधुनिक चिन्तन के प्रति समीक्षात्मक भाव रखने की दृष्टि** दी।

विगत 27 मई से 6 जून 2011 तक, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के लखनऊ स्थित शैक्षिक केन्द्र में, **त्रिक् दर्शन** पर आयोजित कार्यशाला हेतु उनका उद्‌बोधन, वीडियो टेप के रूप में प्रतिभागियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया था, जो उनका सम्भवत: **अंतिम सार्वजनिक उद्‌बोधन** था। शारीरिक अस्वस्थता के कारण, वे उक्त कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके थे। उनके निधन से भारतीय दर्शन और चिन्तन की परम्परा को जो अपूरणीय क्षति हुई है उसकी प्रतिपूर्ति कथमपि सम्भव नहीं है। उनकी पुण्य समृति में प्रकाशित यह स्मृति ग्रन्थ निश्चित ही संग्रहणीय होगा हम इस ग्रन्थ हेतु अपनी शुभकामनाएँ देते हैं

अरुण मिश्र
26.2.2012.

(अरुण मिश्र)
निदेशक (शैक्षिक)

सेवा में,
डॉ. तरुण कुमार द्विवेदी
सुपुत्र स्व. प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी
प्रेमचन्द नगर कालोनी, पाण्डेयपुर, वाराणसी

***Head Office :*** Darshan Bhawan, 36, Tuglakabad Institutional Area, Mehrauli Badarpur Road, New Delhi-110 062
Tel. : 011-29964753, 29964754 • Fax : 011-29964750 • E-mail : icpr@del2.vsnl.net.in • Website : www.icpr.in

रजतजयन्तीवर्ष – 2011
राष्ट्रिय
संस्कृत
संस्थान
मानितविश्वविद्यालय, लखनऊपरिसर
विशालखण्ड-4, गोमतीनगर, लखनऊ-226010 (उत्तर प्रदेश)
फोन : 0522-2393748, फैक्स : 0522-2302993
ई-मेल : rskslucknow@yahoo.com

Silver Jubilee Year - 2011
Rashtriya
Sanskrit
Sansthan
Deemed University, Lucknow Campus
Vishal Khand-4, Gomti Nagar, Lucknow-226010
Uttar Pradesh, India
Ph. : 0522-2393748 Fax : 0522-2302993

(Established under the auspices of the Ministry of Human Resources Development, **Govt. of India**)

क्रमांक : रा.सं.सं.ल.प./ दिनांक : 28-02-2013

## शुभकामना

भारतीय दर्शन, विशेषत: आगम सहित शैव-शाक्त-पाञ्चरात्रादि तंत्रों के गम्भीर विद्वान्, चिन्तक, संस्कृत और संस्कृतिविद्, लेखक और सम्पादक, महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविराज के शिष्य एवं राजकीय संस्कृत कालेज वाराणसी, बाद में वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय (वासरेण सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) के सांख्ययोगतंत्रागम विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष रह चुके पं. व्रजवल्लभ द्विवेदी जी का दिनांक 17 फरवरी, 2012 को काशी में देहावसान हो गया था।

आचार्य द्विवेदी वाराणसी के जंगमवाड़ी मठ द्वारा परिचालित संस्था **शैव भारती शोध संस्थान** के निर्देशक व केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान (सम्प्रति **केन्द्रीय तिब्बती विश्वविद्यालय** सारनाथ) की महत्वकांक्षी 'दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ योजना' के अन्तर्गत उपनिदेशक भी रहे। कई बार योरोपीय विश्वविद्यालयों/संस्थाओं का शैक्षिक भ्रमण भी किया। उनके शिष्यों में भारतीय अध्येताओं के अलावा विदेशी विद्वानों का भी बड़ा वर्ग है। उनके अनेक संस्कृत निबन्धों/ग्रन्थों के योरोपीय भाषाओं में अनुवाद भी हुए हैं। उनके ग्रन्थों की संख्या विशाल है।

उनका यह स्मृति ग्रन्थ निश्चत ही अभूतपूर्व होगा तथा इसमें संस्कृत जगत के विशिष्ट पंडितों के लेख संग्रहणीय होंगे। मैं इसकी प्रकाशन हेतु शुभेच्छा प्रेषित करता हूँ।

(प्रो. सुरेन्द्र झा)
प्राचार्य

सेवा में,
डॉ. तरुण कुमार द्विवेदी
पुत्र स्व. आचार्य व्रजवल्लभ द्विवेदी
प्रेमचन्द नगर कालोनी, पाण्डेयपुर
वाराणसी

गुरूदेव

महामहोपाध्याय श्री गोपीनाथ कविराज

पितामह स्व. पं. श्री रघुनाथ जी द्विवेदी

पिता श्री स्व. पं. गोपीवल्लभ जी द्विवेदी एवं माता श्री स्व. नर्बदाबाई

आचार्य स्व. व्रजवल्लभ द्विवेदी एवं श्रीमती सुशीला द्विवेदी

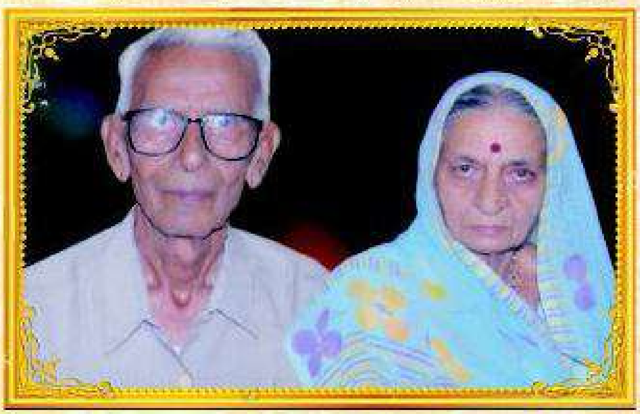

भ्राता श्री विद्यावल्लभ दवे एवं श्रीमती प्रेमलता देवी

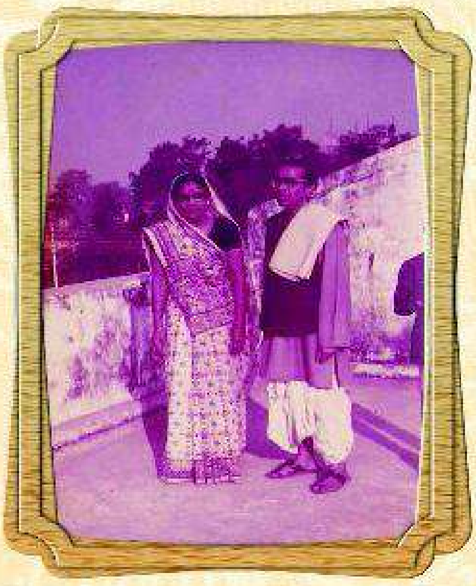

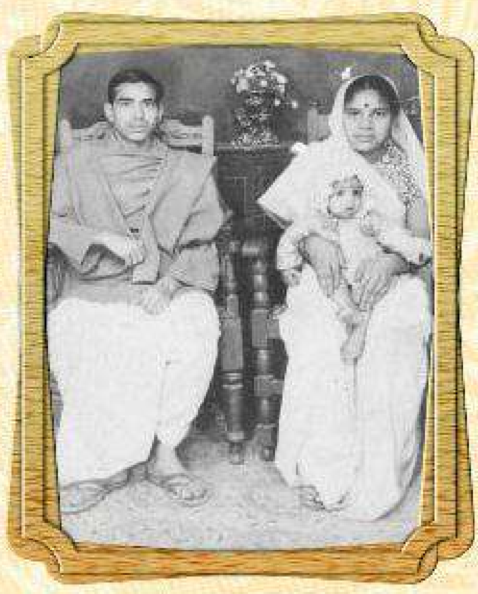

आचार्य स्व. व्रजवल्लभ द्विवेदी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला द्विवेदी

पारिवारिक वैवाहिक कार्यक्रमों में आचार्य श्री

अपने परिवार एवं मित्रों के साथ आचार्य श्री

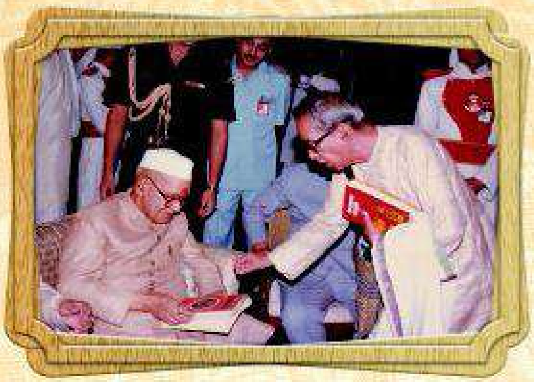

महामहिम राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा को राष्ट्रपति भवन में अपनी पुस्तक एक विश्व एक संस्कृति भेट करते हुए।

महामहिम राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा को राष्ट्रपति भवन में अपनी पुस्तक विज्ञान भैरव भेट करते हुए तथा पुस्तक के बारे में जानकारी देते हुए।

महामहिम राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा द्वारा राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करने के उपरान्त फोटो सेशन।

महामहिम राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा से राष्ट्रपति भवन में वार्तालाप करते हुए आचार्य श्री एवं उनकी धर्मपत्नी।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल को पुस्तक भेंट करते हुए आचार्य श्री।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के द्वारा पुरस्कार ग्रहण करते हुए।

वाराणसी के सर्किट हाऊस में आचार्य श्री की पुस्तक का विमोचन करते हुए, भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरो सिंह शेखावत, उ.प्र. के राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री एवं विश्वविद्यालय प्रकाशन के श्री पी० मोदी जी।

वाराणसी के सर्किट हाऊस में आचार्य श्री की पुस्तक विमोचन के अवसर पर, भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरो सिंह शेखावत, उ.प्र. के राज्यपाल श्री विष्णुकान्त शास्त्री एवं विश्वविद्यालय प्रकाशन के श्री पी० मोदी जी, डा. तरुण द्विवेदी, प्रो. शीतला प्रसाद उपाध्याय

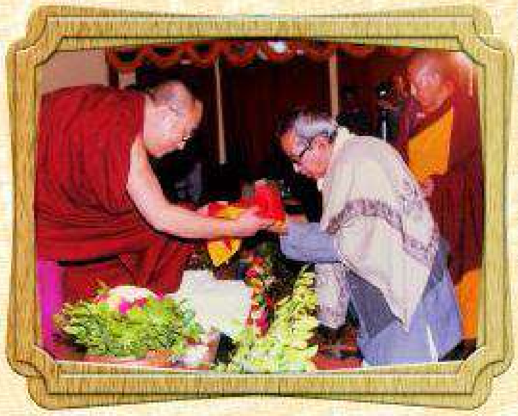

विभिन्न शैक्षणिक एवं धार्मिक संस्थाओं द्वारा सम्मान प्राप्त करते हुए आचार्य श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी।

विभिन्न कार्यक्रमों में सम्मिलित आचार्य द्विवेदी जी।

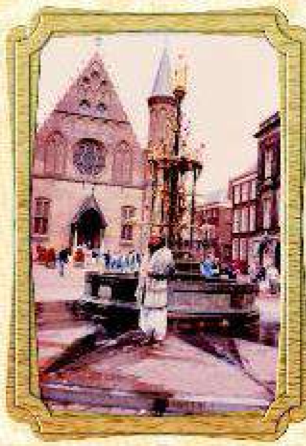

यूरोपीय देशों की शैक्षणिक यात्रा के दौरान विशेषज्ञों से मुलाकात एवं
ऐतिहासिक इमारतों का अवलोकन करते हुए आचार्य द्विवेदी जी

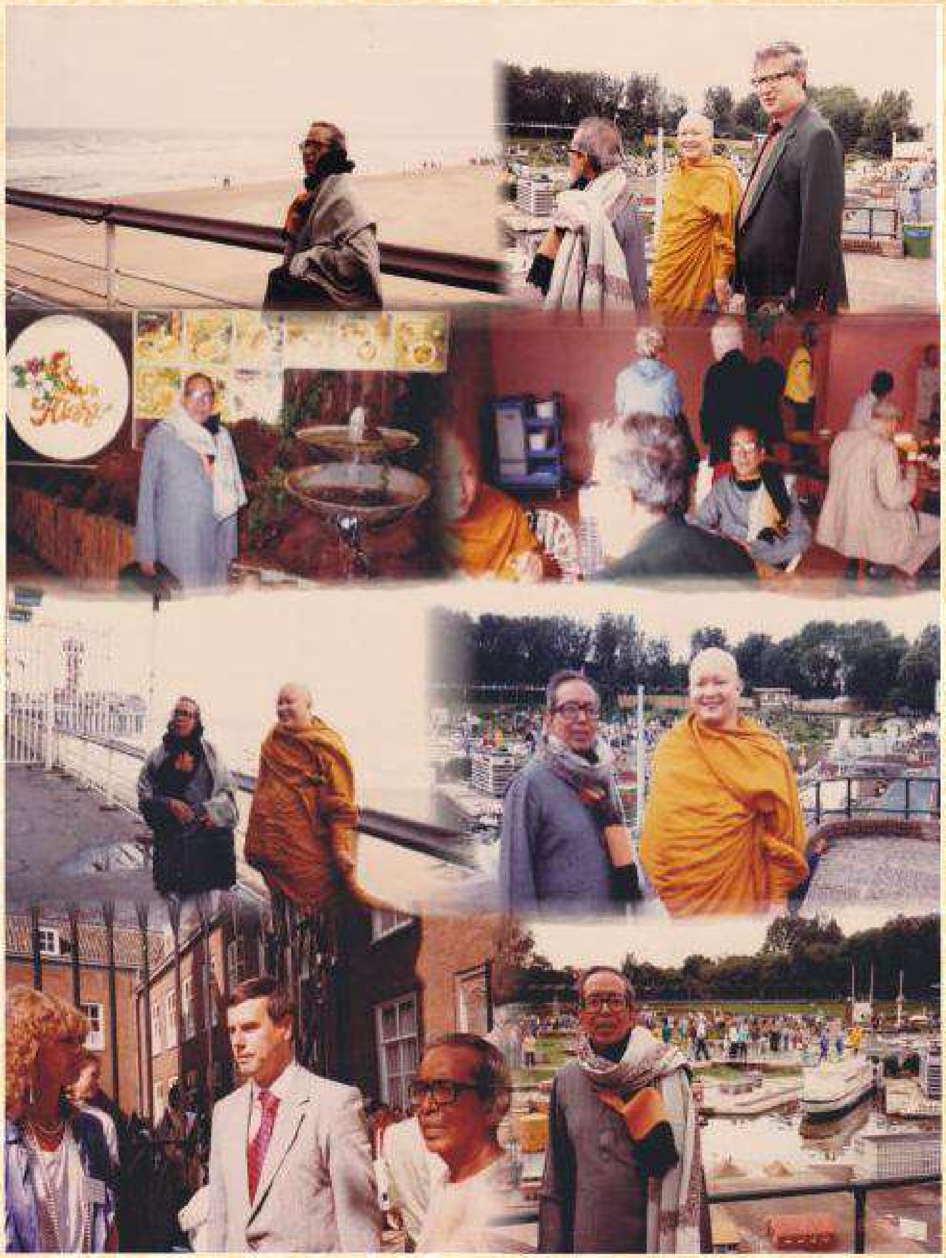

यूरोपीय देशों की शैक्षणिक यात्रा के दौरान
आचार्य श्री विभिन्न मुद्राओं में।

आचार्य श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी जी की स्मृति में प्रारम्भ किये गये शैवभारती पुरस्कार, जंङ्गमवाड़ी मठ एवं काशी गौरव सम्मान, सार संस्थान द्वारा प्रदत्त पुरस्कारों में काशी की महान विभूतियाँ।

# संक्षिप्त परिचय

| | | |
|---|---|---|
| **नाम** | : | *आचार्य प्रो0 व्रजवल्लभ द्विवेदी* |
| **जन्म** | : | शाहपुरा (राजस्थान), जन्म तिथि—श्रावण कृष्ण दशमी शनिवार, संवत् 1978 (15 जुलाई, सन् 1926) |
| **स्थायी पता** | : | गुजराती मोहल्ला, केकड़ी, जिला-अजमेर (राजस्थान) |
| **पता** | : | एम0एम0 3 फेज-2, प्रेमचन्द नगर कालोनी, पाण्डेयपुर, वाराणसी-221002 |
| **फोन नं0** | : | (0542) 2586011 |

**(क) शैक्षणिक अर्हता (उपाधियाँ) —**

1. दर्शनाचार्य, प्रथम श्रेणी, राजकीय संस्कृत महाविद्यालय, वाराणसी
2. एम0ए0 'संस्कृत' प्रथम श्रेणी, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा
3. साहित्य रत्न 'हिन्दी', हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

**(ख) अन्य शैक्षणिक उपलब्धियाँ—**

1. सहायक सम्पादक, सारस्वती सुषमा, संस्कृत त्रैमासिक शोध पत्रिका, राजकीय संस्कृत महाविद्यालय एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
2. प्रकाशनाधिकारी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
3. प्राध्यापक योग-तन्त्र विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
4. आचार्य एवं अध्यक्ष सांख्ययोगतन्त्रागम विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
5. शास्त्र चूड़ामणि विद्वान् (विजिटिंग प्रोफेसर), सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
6. उपनिदेशक, दुर्लभ ग्रन्थ शोध योजना, केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान सारनाथ, वाराणसी
7. सम्पादक, तन्त्रग्रन्थों के साथ हिन्दी भाषा की अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका 'धी:'
8. सम्पादक, गाण्डीवम्, संस्कृत साप्ताहिक पत्रिका, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

**(ग) (मानद रूप से)कार्य किया—**

1. निदेशक, शैव भारती शोध प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी (केन्द्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त)
2. सदस्य, कार्य परिषद्, गुरुसिद्धपीठ गणेशपुरी, ठाणे, मुम्बई।

3. संरक्षक, सार संस्थान, वाराणसी
इसके अतिरिक्त अनेक विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं के कार्यपरिषद् एवं परीक्षा समिति के मानद सदस्य।

**(घ) पुस्तकें, जिनको देश-विदेश में अत्यन्त ख्याति प्राप्त हुईं हैं—**

1. नित्याषोडशिकार्णव (त्रिपुरा तन्त्र) संस्कृत (इस पुस्तक की भूमिका 120 पृष्ठ की, 1967 में प्रथम संस्करण प्रकाशित)
2. निगमागमीयं संस्कृतिदर्शनम् (संस्कृत)
3. विज्ञान भैरव (काश्मीर का योगशास्त्र) (हिन्दी)
4. तन्त्रागमीय धर्म-दर्शन (हिन्दी) (दो खण्डों में 1000 पृष्ठों का ग्रन्थ)
5. एक विश्व : एक संस्कृति
6. वेदार्थपारिजात शुक्लयजुर्वेद भाष्य (अनन्तश्री स्वामी करपात्री जी महाराज विरचित भाष्यभूमिका का 2000 पृष्ठ में हिन्दी अनुवाद)
7. सात्वतसंहिता (संस्कृत) (पांचरात्र वैष्णवागम)

इनके अतिरिक्त **नब्बे पुस्तकों** का लेखन, सम्पादन व अनुवाद एवं **300 से अधिक लेख एवं निबन्ध देश-विदेश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।**

**(ङ) कुछ प्रमुख निबन्ध जिनका देश-विदेश की पत्रिकाओं प्रकाशन हुआ है— विवरण—**

1. "आगम और तन्त्रशास्त्र" (आगम आणि तन्त्रशास्त्र) का मराठी अनुवाद, पूना से सन् 1978 ई0 में वेदशास्त्रोत्तेजक सभा द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ "प्राचीन भारतीय विद्येचे पुनर्दर्शन" (पृ0 181-196) में मुद्रित।
2. "तन्त्रशास्त्राणां सामयिक उपयोग:" (The utility of Tantras in Modern Times) सन् 1999 में लीडेन, अमेरिका आदि स्थानों से इ0जे0 ब्रिल द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ "दी संस्कृत ट्रेडीशन एण्ड तान्त्रिज्म" (पृ0 32-44) में प्रकाशित।
3. "देवो भूत्वा यजेद् देवान्" (Having Become a God, He should sacrifice to the Gods) सन् 1992 में डॉ0 आन्द्रे पादु के सम्मान में स्टेट युनिवर्सिटी ऑफ न्यूयार्क से "रिचुवल एण्ड स्पेक्युलेशन इन अर्ली तान्त्रिज्म" (पृ0 32-44) में प्रकाशित।
4. "बौद्ध तन्त्रों के अनुशीलन के नये आयाम" (A New Dimension to the study of the Buddhis Tantras) सन् 1999 में डॉ0 विनयतोष भट्टाचार्य की स्मृति में कलकत्ता से प्रकाशित ग्रन्थ "तान्त्रिक बुद्धिज्म" (पृ0 146-158) में प्रकाशित।
5. "तन्त्रेषु वैदिककर्मकाण्डस्य प्रभाव:" (Le Parole EI MARMI) रोम से प्रकाशित पुस्तक।

(च) अभी तक प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान—

1. **कालिदास पुरस्कार, 1977 ई0 उ0 प्र0 संस्कृत अकादमी, लखनऊ।**
2. संस्कृत साहित्य पुस्कार, कृति ''विज्ञानभैरव'' पर 1978 ई0 उ0 प्र0 संस्कृत अकादमी, लखनऊ।
3. विशेष पुरस्कार, कृति ''तन्त्रयात्रा'' पर 1982 ई0, उ0प्र0 संस्कृत अकादमी, लखनऊ।
4. विशेष पुरस्कार, कृति ''लुप्तागमसंग्रह, भाग–1983 ई0 उ0 प्र0 संस्कृत अकादमी, लखनऊ।
5. विशिष्ट संस्कृत साहित्य पुरस्कार 1986 ई0 उ0 प्र0 संस्कृत अकादमी, लखनऊ।
6. राज्यस्तरीय संस्कृत साहित्य पुरस्कार, 1987 ई0 राजस्थान सरकार, जयपुर।
7. **राष्ट्रपति पुरस्कार (राष्ट्रिय–पंडित), महामहिम राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा द्वारा प्रदान। भारत सरकार 1993 ई0।**
8. हारीतराशि सम्मान, महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर द्वारा प्रदत्त, 1995 ई0।
9. मीमांसाकेसरी पुरस्कार सम्मान, वैदिक संस्कृत प्रचार संघ, जयपुर द्वारा प्रदत्त 1996 ई0।
10. श्री जगद्गुरु विश्वभारती पुरस्कार, महाशिवरात्रि, सन् 1998 ।
11. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा संस्कृत वर्ष (2001) में सम्मानित।
12. सर्जना पुरस्कार वर्ष 2007, उ.प्र. हिन्दी संस्थान।
13. महर्षि व्यास पुरस्कार वर्ष 2008, उ.प्र. संस्कृत संस्थानम्।

(छ) साहित्य एवं संस्कृत भाषा में स्थान—

लेखक की कृतियों पर देश और विदेश के विशिष्ट विद्वानों के विचार एवं सम्मतियाँ (संलग्न) लेखक के हिन्दी और संस्कृत भाषा एवं साहित्य में स्थान का निर्धारण चयनकर्ताओं के द्वारा स्वयं किया जाय, यही उचित प्रतीत होता है। यों लेखक ने श्रद्धेय पं0 गोपीनाथ कविराज जी के आदेश के अनुसार तन्त्रागमशास्त्र के दार्शनिक, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुशीलन की पृष्ठभूमि में भारतीय संस्कृति अथ च विश्वसंस्कृति के उपादानों को उजागर करने का प्रयत्न किया है। इनका तन्त्रागमीय धर्म–दर्शन भारतरत्न म0 म0 पी0 वी0 काणे द्वारा रचित ग्रन्थ ''हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र'' के बाद भारतीय विद्या पर लिखा गया विशिष्ट ग्रन्थ है।

(ज) अन्य विवरण—

1. **संस्कृत पत्रकारिता**—ऊपर चर्चित ''सारस्वती सुषमा'' त्रैमासिक शोधपत्रिका (संस्कृत) तथा षाण्मासिक शोधपत्रिका ''धी:'' (हिन्दी) के अतिरिक्त संस्कृत साप्ताहिक ''गाण्डीवम्'' का भी संपादक–मंडल के सदस्य के रूप में सम्पादन तथा सम्पादकीय अग्रलेख। ('तन्त्रयात्रा' और 'निगमागमीयं संस्कृतिदर्शनम्' में इनका पुन: प्रकाशन हुआ है)।
2. **शोध–निर्देशन**—(अ) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में प्राध्यापक तथा अध्यक्ष (प्रोफेसर) पद पर रहते हुए छात्रों को शोधकार्य का निर्देशन। अभी तक **शताधिक छात्र एवं छात्राओं** ने प्रो0 द्विवेदी के निर्देशन में शोध कार्य किया है तथा इस समय देश–विदेश में उच्च पदों पर आसीन

है। (ब) इनके षडध्वविषयक, शिवपुराण और त्रिपुरा-भगवती विषयक तीन निबन्धों को आधार बनाकर तीन शोधकर्ताओं ने अपना-अपना शोधप्रबन्ध तैयार किया है। (स) शैवभारती शोध प्रतिष्ठान में शोधरत चार छात्रों का निर्देशन। (द) विगत कई वर्षों से देश-विदेश के तन्त्रागमशास्त्र पर शोध करने वाले शोधार्थी परामर्श और सहायता के लिए आते रहते हैं।

3. **देश-विदेश की यात्रा—**(अ) विभिन्न सभा-समितियों, संमेलनों और अध्ययन-यात्राओं के प्रसंग में असम (कामरूप) से लेकर द्वारिकापुरी तक तथा जम्मू-तवी (वैष्णो देवी) से लेकर कन्याकुमारी तक पूरे देश की एकाधिक बार यात्रा, (ब) द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा तथा दक्षिण भारत में प्रसिद्ध अष्टमूर्ति शिव की तीर्थों की यात्रा, (स) हालैण्ड एवं इंग्लैण्ड फ्रांस एवं यूरोपीय देश, ईस्ट एशिया तथा काठमाण्डू (नेपाल) की यात्रा सम्पन्न की तथा आक्सफोर्ड, कैम्बिज के अतिक्ति अन्य विख्यात विश्वविद्यालयों में विशेष व्याख्यान दिया। संस्कृत और हिन्दी भाषाओं में इनमें से कुछ यात्राओं का विवरण भी प्रकाशित हो चुका है। अपने मित्रों की सहायता से हालैण्ड और इंग्लैण्ड एवं यूरोपीय देशों के सुदूर भीतरी स्थलों की कार द्वारा यात्रा। प्रो0 द्विवेदी ने विश्व संस्कृत कांफ्रेंस (हालैण्ड) में भारत का प्रतिनिधित्व किया। इन यात्राओं का प्रेरणा-स्रोत काशी के संस्कृत विद्वान् श्री महेश्वर भट्ट का ''पथिकजनपातकचिन्तनस्मृति'' नामक ग्रन्थ रहा है। परिचय लेखक ने अपनी प्रस्तावना के साथ इस ग्रन्थ को प्रथमत: ''सारस्वती सुषमा'' तथा बाद में 'तन्त्रयात्रा' में प्रकाशित कराया है। दिल्ली में हुए कत्ले-आम के ग्रन्थकर्ता महेश्वर भट्ट प्रत्यक्षदर्शी थे।

4. **विशेष अभिरुचि—**भारतीय संस्कृति के अनुशीलन में लेखक की विशेष अभिरुचि है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनका प्रकाशन हुआ है तथा ''आगम और तन्त्रशास्त्र, तन्त्रयात्रा'' जैसे हिन्दी-संस्कृत के संग्रह-ग्रन्थों में इनका पुन: प्रकाशन भी हो चुका है। आगमीमांसा (संस्कृत) और ''भारतीय संस्कृति के नये आयाम'' शीर्षक ग्रन्थ का प्रकाशन दिल्ली के लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) से हुआ है एवं ''भारतीय संस्कृति का समग्र स्वरूप'' नामक ग्रन्थ भी प्रकाशित हो चुका है। संस्कृति सम्बन्धी इन निबन्धों और ग्रन्थों से वर्तमान समय में भारतीय संस्कृति का स्वरूप कैसा हो? इसके लिए यथामति प्रयत्न किया गया है। लेखक का मत था कि सम्पूर्ण मानवता का विकास भारतीय संस्कृति का मुख्य प्रयोजन है। **इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए ही ''तन्त्रागमीय धर्म-दर्शन'' नामक बृहत् ग्रन्थ का और ''एक विश्व : एक संस्कृति'' का निर्माण लेखक ने किया है। हिन्दी भाषा में ये लेखक की सर्वोत्कृष्ट कृतियाँ मानी जा सकती हैं। तन्त्रागमीय धर्म-दर्शन का प्रकाशन शैव भारती शोध प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, गोदोलिया, वाराणसी से और एक विश्व : एक संस्कृति का प्रकाशन विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी से हुआ है।**

******

## राष्ट्रियपण्डित (राष्ट्रपति-पुरस्कृत) श्री व्रजवल्लभ द्विवेदी के द्वारा
## संपादित (स), अनूदित (अ) एवं रचित (र) ग्रन्थ
### देश एवं विदेश के विद्वानों की संमतियाँ एवं प्राप्त पुरस्कार

(स) प्राचीनं निर्णयपत्रम्----(धर्मशास्त्र) लखनऊ के रेजीडेंट के द्वारा प्रेषित वादपत्र का ई.इ. कम्पनी द्वारा स्थापित संस्कृत पाठशाला के विद्वानों का समाधान, सारस्वती सुषमा, व. 6, अ. 3-4; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) पथिकजनपातकचिन्तनस्मृति—— (यात्रावर्णन) महेश भट्ट विरचित। नादिरशाह के कत्लेआम का आँखों देखा विवरण भी। सा. सु., व. 7, अ.2; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) प्रत्यङ्गिरासूक्त—— पिप्पलाद शाखीय, वासुदेवद्विवेदविरचित व्याख्यान सहित। सा. सु., व 7, अ. 3-4.

(स) काण्वसंहिताभाष्यसंग्रह—— आनन्दबोध भट्टोपाध्याय विरचित। 31-40 अध्याय । सा. सु., व. 7, अ.2 से व. 9, अ. 2 पर्यन्त ।

(स) भारोत्थापनयन्त्रनिर्माणविधि—— (शिल्पशास्त्र) देवीसिंह महापति विरचित। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल लिखित प्राक्कथन । सा. सु., व. 12 अ. 2; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) गैरिकसूत्र—— (कला) गंगाराम जड़ी विरचित। पं. रघुनाथ शर्मा द्वारा विरचित विवरण सहित। सा. सु., व. 12, अ. 3-4; तन्त्रयात्रा में पुनः मुद्रित ।

(स) नित्याषोडशिकार्णव——(त्रिपुरा तन्त्र) शिवानन्द की ऋजुविमर्शिनी और विद्यानन्द की अर्थरत्नावली नामक टीकाओं के साथ । यहाँ परिशिष्ट भाग में दीपकनाथ सिद्ध कृत त्रिपुरसुन्दरीदण्डक का, शिवानन्द कृत सुभगोदय, सुभगोदयवासना और सौभाग्यहृदयस्तोत्र का तथा अमृतानन्द कृत सौभाग्यसुधोदय एवं चिद्विलासस्तव का भी प्रकाशन हुआ है। 120 पृष्ठ के संस्कृत उपोद्घात एवं टिप्पणी आदि के साथ इसका प्रकाशन सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की योगतन्त्र-ग्रन्थमाला में हुआ है । इसको उत्तरप्रदेश प्रशासन का कालिदास पुरस्कार प्राप्त हुआ है। 1967 ई. में प्रथम तथा सन् 1984 द्वितीय संस्करण ।

(स) महार्थमंजरी—— (शाक्त क्रमतन्त्र) महेश्वरानन्द कृत स्वोपज्ञ व्याख्या के साथ, संस्कृत उपोद्घात एवं परिशिष्टों से संयुक्त। सं. सं. वि. वि., वाराणसी, 1972 में प्रथम तथा 1992 ई. द्वितीय संस्करण ।

(स) शक्तिसंगमतन्त्र, चतुर्थ खण्ड—— (शाक्त तन्त्र)। विस्तृत संस्कृत उपोद्घात तथा परिशिष्ट आदि से संयुक्त, गायकवाड़ शोध संस्थान, बड़ोदरा (गुजरात) से सन् 1978 में प्रकाशित ।

(अ) विज्ञानभैरव—— (काश्मीर का योगशास्त्र) । अन्वयार्था नामक संस्कृत टीका तथा रहस्यार्था नामक विस्तृत हिन्दी व्याख्या से संयुक्त। विस्तृत हिन्दी उपोद्घात तथा परिशिष्ट के साथ। मोतीलाल बनारसी दास, प्रथम संस्करण, सन् 1978, द्वितीय 1984 ई.। उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ द्वारा पुरस्कृत ।

(अ) वेदार्थपारिजात—— (शुक्ल यजुर्वेद) अनन्तश्री स्वामी करपात्री जी महाराज विरचित भाष्यभूमिका का हिन्दी अनुवाद । 1979-1980 ई. ।

(स) तन्त्रसंग्रह, चतुर्थ भाग—— सर्वविजयी-गुप्तसाधन-माया-षडाम्नाय-गायत्री-चीनाचार-भूतिशुद्धि नामक छ: तन्त्र-ग्रन्थों का संग्राहक। सं. सं. वि. वि. की योगतन्त्र-ग्रन्थमाला में सन् 1981 में प्रकाशित।

(स) सात्वतसंहिता—— (पांचरात्र वैष्णवागम) अलशिंग भट्ट विरचित भाष्य तथा विस्तृत संस्कृत उपोद्धात के साथ सं. सं. वि. वि. ग्रन्थमाला में प्रकाशित । प्रथम संस्करण 1982 ई., द्वितीय 2001.

(र) तन्त्रयात्रा—— तन्त्रागम दर्शन, संस्कृति-साहित्य, विचारविप्रुष:(बिन्दु) और यात्रावर्णन से संबद्ध 76 संस्कृत निबन्धों का संग्रह। उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता से प्रकाशित, सन् 1982 ई.।

(र) आगममीमांसा—— वैष्णव, शैव और शाक्त आगमों का ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक विश्लेषण। दिल्ली स्थित लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) से सन् 1982 में प्रकाशित।

(र) लुप्तागमसंग्रह—— (द्वितीय भाग) विविध ग्रन्थों में उद्धृत अनुपलब्ध आगम-तन्त्रशास्त्र के वचनों का संग्रह । लगभग 400 ग्रन्थों और ग्रन्थकारों के ऐतिहासिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक दृष्टि के परिचायक 220 पृ. के संस्कृत उपोद्धात के साथ। सं. सं. वि. वि. की योगतन्त्र ग्रन्थमाला में सन् 1983 में प्रकाशित । उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत।

(र) आगम और तन्त्रशास्त्र—तन्त्रागम दर्शन और संस्कृति संबन्धी 26 हिन्दी निबन्धों का संग्रह। परिमल पब्लिकेशंस, दिल्ली, सन् 1984.

(स) नेत्रतन्त्र (मृत्युंजयभट्टारक)—— क्षेमराज कृत उद्योत व्याख्या के साथ। विस्तृत हिन्दी उपोद्धात। परिमल पब्लिकेशंस, दिल्ली, सन् 1985.

(स) वेदान्तसूत्र श्रीकण्ठभाष्य (चतु:सूत्री भाग)—— अप्पय दीक्षित विरचित शिवार्कमणिदीपिका नामक व्याख्या के साथ। शिवधर्म ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी से सन् 1986 में प्रकाशित।

(स) गुह्यादि-अष्टसिद्धिसंग्रह—— (बौद्ध तन्त्र)। दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी से सन् 1987 में विस्तृत हिन्दी उपोद्धात के साथ प्रकाशित। यहाँ पद्मवज्र की गुह्यसिद्धि, अनन्तवज्र की प्रज्ञोपायविनिश्चयसिद्धि, इन्द्रभूति की ज्ञानसिद्धि, लक्ष्मींकरा की अद्वयसिद्धि, योगिनी चिन्ता की व्यक्तभावानुगततत्वसिद्धि, डोबी हेरुक की सहजसिद्धि, कुद्दालपाद का अचिन्त्याद्वयक्रमोपदेश और पद्मवज्र (द्वितीय) की अद्वयविवरणप्रज्ञोपायविनिश्चयसिद्धि नामक आठ ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है ।

(स) लिङ्गधारणचन्द्रिका—(वीरशैव) नन्दिकेश्वर शिवाचार्य विरचित। शरद् नामक संस्कृत व्याख्या तथा भाषानुवाद के साथ शिवधर्म ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी से सन् 1988 में प्रकाशित ।

(अ) योगिनीहृदय—अमृतानन्द योगी विरचित संस्कृत व्याख्या तथा भाषानुवाद से संवलित। परिशिष्ट भाग में आदिनाथ विरचित परापंचाशिका समाविष्ट । मोतीलाल बनारसीदास, सन् 1988.

(स) ज्ञानोदयतन्त्र—(बौद्ध तन्त्र), दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ सन् 1988.

(स) अष्टप्रकरण—(सिद्धान्त शैव)। सं. सं. वि. वि. वाराणसी, सन् 1988. यहाँ सद्योज्योति शिवाचार्य विरचित तत्वत्रयनिर्णय, तत्वसंग्रह, भोगकारिका, मोक्षकारिका और परमोक्षनिरासकारिका नामक पाँच ग्रन्थों का, भट्ट रामकण्ठ और अघोरशिव की व्याख्या के साथ; श्रीकण्ठ सूरि कृत रत्नत्रय और भट्ट रामकण्ठ कृत नादकारिका का अघोरशिव कृत व्याख्या के साथ तथा भोजदेव कृत तत्वप्रकाश का दो टीकाओं के साथ प्रकाशन हुआ है।

(र) बौद्ध तन्त्र कोश—(प्रथम भाग) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ सन् 1990.

(र) लुप्त बौद्ध वचन संग्रह—(प्रथम भाग) दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ, सन् 1990.

(स) वसन्ततिलक—(बौद्ध तन्त्र) कृष्णपादविरचित। रहस्यदीपिका नामक व्याख्या के साथ दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना, सारनाथ से सन् 1990 में प्रकाशित ।

(स) डाकिनीजालसंवररहस्य—(बौद्ध तन्त्र) अनंगयोगी विरचित। दु. बौ. ग्र. शोध योजना, सारनाथ सन् 1990.

(स) सम्पादन के सिद्धान्त और उपादान—(कार्यशाला विवरण) । दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ, सन् 1990.

(स) कृष्णयमारितन्त्र—(बौद्ध तन्त्र) । कुमारचन्द प्रणीत रत्नावली पंजिका नामक व्य्राख्या के साथ दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ से सन् 1992 में प्रकाशित ।

(स) महामायातन्त्र—(बौद्ध तन्त्र), । रत्नाकरशान्ति प्रणीत गुणवती नामक टीका के साथ दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ से सन् 1992 में प्रकाशित।

(स) अभिसमयमंजरी—(बौद्ध तन्त्र) शुभाकर गुप्त विरचित। दु. बौ. ग्र. शोधयोजना, सारनाथ, सन् 1993 .

(स) कालचक्रतन्त्र—(बौद्ध तन्त्र), पुण्डरीक विरचित विमलप्रभा नामक टीका सहित। दु.बौ.ग्र. शोधयोजना, सारनाथ द्वितीय भाग, सन् 1994; तृतीय भाग, सन् 1995.

(स) शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिन संहिता—अनन्तश्री स्वामी करपात्री महाराज द्वारा विरचित वेदार्थपारिजात नामक भाष्य से संवलित। श्री राधाकृष्ण धानुका प्रकाशन संस्थान, वृन्दावन द्वारा प्रकाशित। द्वितीय-तृतीय अध्याय संवत् 2046; चतुर्थ-पंचम-षष्ठ अध्याय संवत् 2049; सप्तम से दशम अध्याय पर्यन्त, सं. 2049; एकादश से पंचदश अध्याय पर्यन्त, सं. 2048, षोडश से विंशति अध्याय पर्यन्त, सं. 2048 एवं 21 से 39 वें अध्याय पर्यन्त, संवत् 2048; ये सभी भाग हिन्दी भाषा में लिखित भाष्यनिष्कर्ष से संवलित हैं ।

(र) निगमागम संस्कृति—निगमागम दर्शन, साहित्येतिहास और यात्राविषयक 37 हिन्दी निबन्धों का संग्रह। शिवधर्म ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी सन् 1992.

(अ) चन्द्रज्ञानागम—(वीरशैव) क्रिया एवं चर्यापाद, भाषानुवाद, टिप्पणी, प्रस्तावना। शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1994.

(अ) सूक्ष्मागम—(वीरशैव) क्रियापाद, भाषानुवाद, टिप्पणी, प्रस्तावना। शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1994.

(अ) मकुटागम—(वीरशैव) क्रिया एवं चर्यापाद, भाषानुवाद आदि। शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1994.

(अ) पारमेश्वरागम—(वीरशैव) भाषानुवाद, टिप्पणी, प्रस्तावना । शोध प्रकाशन ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1995.

(स) उतरषट्क—(त्रिपुरा तन्त्र), कुलदीपिका नामक व्याख्या के साथ। सं.सं.वि.वि., वाराणसी, सन् 1995.

(र) निगमागमीय संस्कृति-दर्शन—निगमागम दर्शन, संस्कृति-साहित्य और विचारविप्रुष:(बिन्दु) से संबद्ध 77 संस्कृत निबन्धों तथा टिप्पणियों का संग्रह। शो. प्र. ग्रन्थमाला, जंगमवाड़ी, वाराणसी, सन् 1995.

(स) भारतीय तन्त्रशास्त्र—(कार्यशाला का विवरण)। दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोधयोजना, केन्द्रीय तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, सन् 1995.

(स) ज्ञानदीपविमर्शिनी—(त्रिपुरापद्धति), विद्यानन्द विरचित, परिशिष्ट आदि से संयुक्त। शो. प्र. ग्रन्थ माला, जंगम., वाराणसी सन् 1996 .
(अ) सिद्धान्तप्रकाशिका—(सिद्धान्त शैव) सर्वात्मशंभु विरचित, शैवभारती शोध प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1996.
(स) संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास—तन्त्रागम विषयक एकादश खण्ड, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ, सन् 1997.
(र) भारतीय संस्कृति के नये आयाम—लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय), नई दिल्ली, सन् 1997.
(र) वैष्णवागमविमर्श—वैखानस, पांचरात्र और भागवत आगमों का परिचय, सं.सं.वि.वि. वाराणसी, सन् 1997.
(अ) सिद्धान्तसारावलि—(सिद्धान्त शैव) त्रिलोचन शिवाचार्य विरचित, व्याख्या-भाष्य-विस्तृत प्रस्तावना-परिशिष्ट सहित, शैवभारती शोध प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1998.
(र) भारतीय दर्शन परिभाषा कोश, शाक्त दर्शन—(तृतीय खण्ड)। वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय (शिक्षा विभाग), भारत सरकार, नई दिल्ली, सन् 1999.
(अ) गुरुगीता, गुरुपादुकापंचक सहित—श्लोकानुवाद, भाषाभाष्य, परिशिष्ट से संवलित, शै.भा. शो. प्र. जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 1999.
(अ) देवीकालोखरागम—(वीरशैव), निरंजनसिद्ध विरचित वृति-भाषानुवाद परिशिष्ट सहित, शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2000.
(स) सिद्धान्तशिखामणिमीमांसा—(शास्त्रसंगोष्ठी विवरण), शैव भारती शोध प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2000.
(र) तन्त्रागमीय धर्म-दर्शन——(दो खण्ड)। वैष्णव-शैव-शाक्त-बौद्ध-जैन-स्मार्त नामक तन्त्रागम शास्त्र की छः शाखाओं का ऐतिहासिक-दार्शनिक सांस्कृतिक विश्लेषण । शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी सन् 2000-2001.
(स) साख्ययोगमीमांसा—लेखक एवं अनुवादक, प्रो0 मुकुटबिहारी लाल, शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2001.
(र) भारतीय संस्कृति का समग्र स्वरूप—नैगमिक-आगमिक-सांस्कृतिक-राजनैतिक विश्लेषण परक 38 निबन्धों का संग्रह, शै.भा. शो. प्र. जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2002.
(र) एक विश्व : एक संस्कृति—विश्वविद्यालय प्रकाशन, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी सन् 2003.
(र) भारतीय संस्कृति के मूल तत्व—16 संस्कार, वर्णाश्रम व्यवस्था एवं पुरुषार्थ चतुष्टय का विवेचन, वि. वि. प्रकाशन, चौक, वाराणसी सन् 2003.
(र) भारतीय दर्शन—सांख्य योग, वेदान्त, जैन एवं बौद्ध दर्शन का सामान्य परिचय, वि. वि. प्रकाशन, चौक, वाराणसी सन् 2003.
(अ) वातुलशुद्धात्य तन्त्र—(वीरशैव), भाषाभाष्य-प्रस्तावना-परिशिष्ट संवलित, शै. भा. शो. प्र., जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी सन् 2004.

(र) सांस्कृतिक राष्ट्रवाद—शै. भा. शो. प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2004.
(अ) पंचवर्णमहासूत्रभाष्य—शै. भा. शो. प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2005.
(र) सर्वागम सार सर्वस्व—शै. भा. शो. प्रतिष्ठान, जंगमवाड़ी मठ, वाराणसी, सन् 2005.
(अ) शिवपञ्चविंशतिलोकशतक्रम–सन् 2005
(र) भारत का सांस्कृतिक इतिहास–किशोर विद्यानिकेतन, वाराणसी, सन् 2008.

उक्त सभी पुस्तकें **www.ssar-sansthan.org** की साइट पर उपलब्ध हैं।

## देश एवं विदेश के विद्वानों की संमतियाँ

(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के) योगतन्त्र विभाग में कार्य कर रहे या इसको छोड़कर गये हुए सभी व्यक्तियों में ये (पं. व्रजवल्लभ द्विवेदी) ही एकमात्र व्यक्ति हैं, जिनमें कि मेरे अनुसंधान सम्बन्धी दृष्टिकोण को सही रूप में समझने और उसको उचित पद्धति से कार्यान्वित करने की पूर्ण क्षमता है। इतना ही नहीं, मेरी दृष्टि में योगतन्त्र और आगम विषय पर कार्य कर रहे नई पीढ़ी के विद्वानों में ये योग्यतम व्यक्ति हैं।

**महामहोपाध्याय प0 गोपीनाथ कविराज**
वाराणसी, 27–9–1970

मैंने ग्रन्थ (नित्याषोडशिकार्णव) आद्योपान्त पढ़ लिया है और आपके परिश्रम से बड़ा प्रभावित हुआ । ऐसे सामग्री और ऐसी भूमिका किसी पुस्तक में कभी नहीं देखी थी ।

**लेफ्टिनेन्ट गवर्नर डॉ0 आदित्यनाथ झा**
दिल्ली, 1 अप्रैल 1970

ग्रन्थ (विज्ञानभैरव) के उपोद्घात में व्रजवल्लभ द्विवेदी ने आधुनिकता से ओत–प्रोत एक महत्वपूर्ण बात यह कही है कि किसी समय तान्त्रिक धर्म ने भारतीय संस्कृति को बुलन्दी पर पहुँचाया था ।…लेखक का आग्रह है कि गांधीवादी अथवा समाजवादी दर्शन में किसी योगविधि को नहीं अपनाया गया है, इसीलिये आज वे दिग्भ्रान्त हैं, रुग्ण हैं। भारतीय जनता तन और मन से बीमार है। आवश्यकता है योगशास्त्र के उपचार की। योगवासिष्ठ और विज्ञानभैरव जैसे ग्रन्थ इस अभाव को पूरी ईमानदारी से पूरा कर सकते हैं ।

**आकाशवाणी, रायपुर**

पं. व्रजवल्लभ द्विवेदी द्वारा लिखित निगमागम संस्कृति नामक पुस्तक 37 निबन्धों का एक संकलन है। सभी निबन्ध भारतीय संस्कृति एवं भारतीय के दर्शन के परिचायक है। प्रो0 द्विवेदी उच्च कोटि के विद्वान् हैं। इस पुस्तक की रचना इनका अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य है।

***बी0 सत्यनारायण रेड्डी, (राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, 1992)***

प्रो0 व्रजवल्लभ द्विवेदी योगशास्त्र के योग्यतम विद्वान् है, उनके द्वारा लिखित 'विज्ञान भैरव' ग्रन्थ का मैने अध्ययन किया, यह तन्त्रशास्त्र का अद्वितीय ग्रन्थ है, इसकी तुलना अन्य ग्रन्थों से नहीं की जा सकती।

***डा. मर्रि चेन्नारेड्डी,***
***राज्यपाल उ.प्र., 1978***

प्रो0 द्विवेदी जी जैसी तन्त्र साधना तथा विद्वता विश्व के गिने चुने व्यक्तियों में ही देखने को मिलती है, इनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थ तन्त्रशास्त्र भारत एवं सम्पूर्ण विश्व के लिये अतुलनीय है, भारतीय संस्कृति पर द्विवेदी जी की विचारधारा को अपनाना राष्ट्रहित में होगा।

***नारायण दत्त तिवारी***
***मुख्यमंत्री, उत्तरांचल***
***25 जुलाई, 2002***

प्रो. व्रजवल्लभ द्विवेदी संस्कृत साहित्य एवं योग दर्शन के प्रकांण्ड विद्वान् हैं इनके द्वारा लिखित ग्रन्थ एवं उनकी अद्वितीय भूमिकाएँ सभी विषय के शोधार्थीयो के लिये अनुकरणीय होगा। विश्व पटल पर प्रो. द्विवेदी जी चमकते सितारे हैं।

***प्रो. विष्णुकान्त शास्त्री***

***राज्यपाल, उ.प्र., 2003***

प्रो0 द्विवेदी जी का ग्रन्थ ''एक विश्व एक संस्कृति'' विश्व में व्याप्त नफरत एवं युद्ध के समाधान की ओर हमें ले जाता है, यह ग्रन्थ धर्मनिरपेक्ष की सही व्याख्या करता है। द्विवेदी जी का यह प्रयास प्रशंसनिय है।

***भैरो सिंह शेखावत***
***उपराष्ट्रपति***
***भारतीय गणराज्य,***
***जुलाई, 2003***

धर्म और संस्कृति के इस विघटनकारी देश-काल में इस पुस्तक (एक विश्व : एक संस्कृति) का विशेष महत्त्व है। भारत की पुरानी विचारधारा को आधार बनाकर लेखक ने सचमुच ही एक विश्व  की स्थापना की है। यह पुस्तक भारतवासियों में आत्मविश्वास एवं दुनिया के अन्य लोगों का मार्ग प्रशस्त करती है। आशा है इस पुस्तक का गहरा स्वागत होगा।

***प्रो0 युगेश्वर, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग***

***महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।***

'एक विश्व : एक संस्कृति' के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अतिशय उत्प्रेरक महत्त्वपूर्ण, अमूल्य सोद्देश्च विचार है, जिसका गुम्फन भारतीय मनीषा के प्रतिनिधि, विख्यात तन्त्रागमवेत्ता, चिन्तक विद्वान् प्रो० व्रजवल्लभ द्विवेदी ने अत्यन्त अध्यवसायपूर्वक किया है।..... 'एक विश्व : एक संस्कृति' वस्तुतः विशद आध्यात्मिक चिन्तन की पृष्ठभूमि पर विनिर्मित मानव मूल्यों और सांस्कृतिक संवेदनाओं की अद्वितीय विरासत है। आचार्य द्विवेदी जी ने भारतीय चिन्तन के आलोक में नाना धर्म-दर्शन-सभ्यता-संस्कृतियों का गहन विश्लेषण करके जो पदार्थ प्रस्तुत किया है, वह निःसन्देह मानवमात्र की कल्याणयात्रा का निर्दुष्ट पाथेय है।

*डॉ. प्रभुनाथ द्विवेदी, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग*

*महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, 26 जून, 2003 ई०*

.... The introduction (to *Nityasodasikarnava*) is highly interesting piece of original research work (by Professor Vrajavallabha Dwivedi) in a field hardly accessible to modern academic scholarship....

**Mahamahopadhyaya Pt. Gopinatha Kaviraja**
Varanasi, 7 September, 1968

....Recent instances of a correct procedure in dealing with the written sources of Hindu Tantrism of the Sakta denomination are Carlstedt's studies on the KT-regrettably written in Swedish-and in another way, Dwivedi's edition of, and Sanskrit introduction into, the NST *(Nityasodasikarnava Tantra)* very useful.

**Hindu Tantrism, p.4**
Leiden : E. J. Brill, 1979

....Prof. Dwivedi, a well-known scholar and adept in the field of Tantrasastra, has very successfully done well justice to this Tantra (*Saktisangama Tantra*) in his learned introduction....

**A. N. Jani**
Director, Oriental Institute, Baroda
21 February, 1978

....In editing such rare text *(Vijnanabhairava)* painstakingly Pt. Dwivedi deserves special mention. His wide range of knowledge in the fields of Yoga and Tantra has made such a comparative estimate of the Saiva-agama text possible. The editor has shown his openmindedness. Undoubtedly, the present edition of the *Vijnanabhairava* has been a search light for an inquisitive mind.

**N.K. Bose Memorial Foundation Newsletter**
2 June, 1979

....Many of the important works on Yoga-Tantra produced by Sri Dwivedi are testimony to his sound grasp of the system. The present work (*Vijnanabhairava*) only adds on more feather to his cap.

**Rtam**
Lucknow

....This excellent edition (of Nityasodasikarnava, ed. by Vrajavallabha Dwivedi) is preceded by masterful introduction in Sanskrit which offers a succinct survey of the whole Tantric tradition.

**Hindu Tantric Literature in Sanskrit (P. 60),**
by T. Goudriaan (Holland).

....It (Satvata-samhita) is a contribution to scholarship of which you (Vrajavallabha Dwivedi) may be justly proud, and for which you will be remembered.

**H. Daniel Smith**
Professor of Religion
Syracuse University, New York

What is at present required from scholars of Tantrism is, in my opinion, the close study of single schools, on the basis of the published texts (where they exist) and, above all, the difficult work of editing what is preserved in manuscript form. Exemplary in this respect is the valuable work of Prof. Vrajavallabha Dwivedi, ex-Head of the Department of Yogatantra at the Sanskrit University of Varanasi, author of many editions of Tantric texts often accompanied by important introduction, capable as few others of moving with equal authority among the most diverse schools.

**East and West, Roma**
Vol. 33. 1983

....One should add that his numerous papers, and still more the excellent critical editions, he has made of such important texts as the Nityasodasikarnava, the Saktisangamatantra, part 4, the Satvatasamhita, and, most recently, the second volume of Luptagamasangraha (to mention only these four), together with the very learned and informative introductions in Sanskrit he wrote for these editions, are outstanding contributions to the domain of tantric studies.

Shree Vraj Vallabha Dwivedi is thus very well known, and very highly appreciated as a scholar in French indological circles (as well as, I happen to know, in corresponding circles in Great Britain, Germany and Holland.)

**(Dr.) Andre Padoux**
Director of Research in the
French Sentonal Centre for Scientific Research–10.2.84

....Both Prof. Gnoli (formerly my teacher and now my colleague in the University of Rome) and I hold you in high esteem, as the best authority in the field of Tantric studies.

**Dr. Raffable Torella**
Universita, Degli Studi Di Roma La Sapienza,
Dipartimento Di Studi Orientali,
Facolta' Di Littere E Filosofia, 12-3-84

******